I

Lecture Series No:- 38.

Online class.
Date - 3/8/2022.
Day - [illegible]
Time - 10: to 10:50 A.M

Topic,
Leibnitz.

Dr. Surjita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A Part - I
Paper - (S.)
A.N.D. College Shahpur patory
Samastipur,

Ans:→

Leibnitz के अनुसार देश और काल की अपनी स्वतंत्र सत्ता नहीं है। परन्तु ये Monads के बीच के सम्बन्ध के आधार पर वास्तविक रचनायें हैं। हम देखते हैं कि वस्तुएं, नीचे - ऊपर, दूर - नजदीक दाहिने - बायें हैं और इन्हीं सम्बन्धों के आधार पर देश की व्याख्या करते हैं। इसी तरह घटनाओं के बीच पूर्व सम्बन्धों के आधार पर काल की प्रतिभावना (कल्पना) मानी बनाते हैं परन्तु कान्ट (Kant) ने (इस मत से) इस मत की आलोचना करते हुए बतलाते हैं कि Leibnitz के अनु-

P.T.O.

(2.)

सार पहले हमें देश और काल की भावना नहीं होती पर हम ऊपर नीचे, अलग अगल-बगल इत्यादि के सम्बन्ध को देखकर देश प्रत्यय की रचना करते हैं। परन्तु प्रश्न उठता है कि ऊपर-नीचे, अगल-बगल, दूर-नजदीक अन्य ऐसे गुण हैं जो हम व्यक्तियों के समझ में आ ही नहीं सकते ~~जिन्हें~~ जिन्हें देश और काल (space and time) का ज्ञान नहीं है। इसलिए यदि हम मान लें कि बिना देश काल के ऊपर-नीचे, अगल-बगल इत्यादि का ज्ञान हो सकता है। तो हमारी भूल है। अनुभव के आधार पर हम देश-काल की कल्पना नहीं करते बल्कि हम देश काल के कारण etc.

END.